

भारत के निर्वाचनों में जनजाति-आधारित मतदान का विश्लेषण

शोधार्थी – अमित बामनिया

सारांश - जनजाति-आधारित मतदान का मतलब है कि मतदाता अपनी जनजाति के आधार पर किसी खास पार्टी या उम्मीदवार को वोट देते हैं। भारत में, यह चुनावी राजनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है, हालांकि हाल के वर्षों में इसमें कुछ बदलाव भी देखने को मिले हैं। लंबे समय तक यह माना जाता रहा है कि भारतीय मतदाता अपनी जाति या जनजाति के अनुसार मतदान करते हैं। राजनीतिक दल उम्मीदवार का चयन करते समय और रणनीति बनाते समय किसी निर्वाचन क्षेत्र की जनजातीय संरचना का ध्यान रखते हैं। अनुसूचित जनजाति (एसटी) के लिए आरक्षित सीटों के कारण जनजातियों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व मिलता है। संविधान के तहत लोकसभा में 47 सीटों जनजातियों के लिए आरक्षित हैं। 2014 के बाद से, वर्ग-आधारित तत्वों का प्रभाव बढ़ने के कारण जाति और जनजाति के प्रभाव में कुछ कमी आई है। शहरीकरण भी मतदान पैटर्न को प्रभावित कर रहा है। जनजातियों के भीतर भी सामाजिक-आर्थिक भिन्नता हो रही है, जिससे मतदान पैटर्न पर असर पड़ रहा है। भारत निर्वाचन आयोग (ECI) के प्रयासों से, विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTG) सहित, जनजातीय समुदायों के मतदान में वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए, 2024 के आम चुनाव में अंडमान-निकोबार द्वीप समूह के शोम्पेन जनजाति ने पहली बार मतदान किया।

मूलशब्द - जनजाति-आधारित मतदान, अनुसूचित जनजाति, राजनीतिक दल, आरक्षित, भारत निर्वाचन आयोग, जनजातीय समुदायों, आम चुनाव, निर्वाचन क्षेत्र

1 प्रस्तावना

मत व्यवहार, मत डालने के तरीकों या उन कारकों को परिभाषित करता है जो वोट देने में लोगों को प्रभावित करते हैं। इसके अध्ययन से पता चलता है कि मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक कौन-कौन से हैं। मतदान व्यवहार का अध्ययन, मतदान के आँकड़ों, चुनावी आँकड़ों के रिकार्ड या अवलोकन तक सीमित नहीं है। यह मतदाताओं के अनुभव, भावना

आदि के मनोवैज्ञानिक पहलुओं को शामिल करता है और राजनीतिक कार्यवाही और संस्थागत ढाँचे के साथ उनके संबंधों को भी शामिल करता है।

2 भारत में मतदान व्यवहार के अध्ययन की उत्पत्ति

मत व्यवहार का अध्ययन निर्वाचन अध्ययनों का एक हिस्सा है। चुनावों के अध्ययन के विषय को सेफोलोजी कहते हैं। इसका उद्देश्य चुनावों के दौरान मतदाताओं के व्यवहार के बारे में प्रश्नों का विश्लेषण करना होता है। मतदाता किसी उम्मीदवार को वोट क्यों देते हैं? या वे निर्वाचन में एक ही पार्टी को क्यों पसंद करते हैं? क्या ये आर्थिक कारक? क्या यह मजबूत नेतृत्व या करिशमाई नेतृत्व हैं? ये कुछ सवाल हैं जिन पर मतदान के निर्धारकों के संबंध में अध्ययन किया जाता है। भारत में राजनीतिक विद्वान, समाजशास्त्री, मानवविज्ञानी, मीडिया हाउस और राजनीतिक दल चुनावी अध्ययनों में लगे हुए हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में 1951-52 के प्रथम आम चुनावों के समय से 1950 के दशक से निर्वाचन अध्ययन शुरू हुए थे। लेकिन व्यवस्थित तरीके से चुनावी अध्ययन 1960 के दशक से शुरू हुए थे। रजनी कोठारी और मायरन बीनर जैसे राजनीतिक वैज्ञानिकों ने इसका आरंभ किया था। 1980 के दशक में प्रणय रॉय और अशोक लाहिरी की पुस्तक ने इस अध्ययन को नयी गति दी।

लेकिन 1990 के दशक से ही चुनावी अध्ययनों का निर्यात तरीके से अध्ययन हो रहा है। इसका प्रमुख कारण लोक सभा था राज्यों की विधान सभाओं के निर्वाचन में हो रही निरंतर वृद्धि है। 1990 के दशक में भारत में चुनावी अध्ययन की पहल को शुरू करने का श्रेय जाने माने शिक्षाविद योगेन्द्र यादव को जाता है जो कि सी.एस.डी.एस से संबंधित रहे। यह ठीक लोकनीति के नाम से जाने वाले एक संगठन के बैनर तले निर्वाचन के अध्ययन का आयोजन करती है। सी.एस.डी.एस. टीम के सदस्यों के रूप में, देश में विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्वानों ने निर्वाचन अध्ययन की व्यवस्था थी। निर्वाचन अध्ययन करने के तरीकों में मुख्य रूप से सर्वेक्षण शामिल हैं। इन सर्वेक्षणों को राष्ट्रीय निर्वाचन सर्वेक्षण कहा जाता है। निर्वाचन से पहले या बाद में; शोधकर्ता निर्वाचन प्रभाव के विभिन्न पहलुओं को जानने के लिये सर्वेक्षण के अध्ययन के महत्वपूर्ण पहलू हैं। इन अध्ययनों के नतीजों को कई पुस्तकों, लेखों, पत्रिकाओं में प्रकाशित भी किया जाता है। सी.एस.डी.एस. के अलावा, कई शोधकर्ता और मीडिया समूह, राजनीतिक दल मतदान व्यवहार के निर्धारकों के अध्ययन में संलग्न हैं।

3 जनजाति द्वारा मतदान को प्रभावित –

जनजातियाँ, जातियों या वर्गों से अलग होती हैं। जाति का संबंध किसी व्यक्ति के सामाजिक स्तर से है जो हिन्दूओं, मुस्लिमों या सिखों में पाया जाता है। जबकि जनजाति की पहचान किसी अन्य लक्षणों पर जा सकती है। इन लक्षणों में सबसे प्रमुख है, उनका प्रकृति के निकट होना, वन संपदा रहना, प्राकृतिक संसाधन या खनिज संपदा पर उनकी अर्थव्यवस्था की निर्भरता, जनजातियों के सदस्यों में आपेक्षिक सामाजिक समानता तथा महिलाओं की आपेक्षिक स्वतंत्रता होना। जनजातियाँ विभिन्न धर्मों से संबंध रखती हैं जैसे, इस्लाम, ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म आदि। संविधान में इनके लिये अलग से प्रावधान किये गये हैं। पाँचवीं एवं छठी सूची में जनजातिय इलाकों के लिए शासन का प्रावधान किया गया है। इन प्रावधानों में उनकी पहचान की रक्षा जैसे संस्कृति, रीति-रिवाज या आर्थिक हित शामिल है। भारत में कई इलाकों में जनजातियाँ रहती हैं जैसे उत्तर-पूर्व भारत में असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मणीपुर, नागालैण्ड, मिजोरम और सिक्किम में। इसके अलावा वे अन्य क्षेत्रों भी रहती हैं, जैसे छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल इत्यादि में। जनजातियों की हमेशा शिकायत रही है कि उन्हें अलगाव का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी लोग उनकी अर्थव्यवस्था एवं संस्कृति का शोषण करते हैं। कई अवसरों पर इसका परिणाम जातिय हिंसा का रूप ले लेता है। राजनीतिक दल, छात्र, संगठन एवं अन्य सामाजिक संगठन जनजातियों को संगठित करती हैं। प्रत्येक निर्वाचन में राजनीतिक दल आदिवासी संस्कृति उनकी पहचान, अर्थव्यवस्था एवं स्वायत्ता जैसे मुद्दों को उठाती हैं। सबसे महत्वपूर्ण मतदान व्यवहार का निर्धारक कारक हैं उनकी सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण करना, प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करना, जैसे, जंगल, खनिज एवं प्राकृतिक संसाधन। पाँचवीं एवं छठी अनुसूची में क्षेत्रीय विकास, राजनीतिक स्वायत्ता जैसे मुद्दों को शमिल किया गया है। ये मुद्दे प्रमुखतया आदिवासियों के मतदान व्यवहार का निर्धारण करते हैं।

4 जनजाति क्षेत्र में मतदान को प्रभावित करने वाले कारक -

जनजातियों के मतदान को प्रभावित करने वाले कारकों में कई पहलू शामिल हैं, जो उनकी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति से जुड़े होते हैं। हाल के चुनावों और अध्ययनों से पता चला है कि ये कारक क्षेत्र के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन कुछ मुख्य मुद्दे सामान्य हैं।

4.1 आर्थिक और विकास संबंधी मुद्दे

- खनन, बाँध निर्माण और वन कटाई जैसी परियोजनाओं के कारण अक्सर जनजातियों को उनकी ज़मीन और आजीविका से विस्थापित होना पड़ता है, जिससे सरकार के प्रति उनका असंतोष बढ़ सकता है।

- सरकार की विभिन्न योजनाएँ, जैसे कि प्रधानमंत्री जन-जातीय उन्नयन ग्राम अभियान (पीएम जुगा), स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविका में सुधार के लिए शुरू की गई हैं। इन योजनाओं का क्रियान्वयन और लाभ जनजातियों के मतदान व्यवहार पर गहरा असर डाल सकता है।
- स्थानीय विकास, स्वास्थ्य सेवाएँ और शिक्षा जैसे बुनियादी ढाँचे संबंधी मुद्दे मतदान को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं।

4.2 सामाजिक और सांस्कृतिक कारक

- आरक्षण की नीतियाँ और पहचान का मुद्दा जनजातीय मतदान को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। कुछ समूह आरक्षण व्यवस्था में बदलाव से चिंतित हैं, जबकि कुछ को अपनी पहचान मिटने का डर है।
- भारतीय समाज में जाति और धर्म का प्रभाव गहरा है, और जनजातीय समुदाय भी इससे अछूता नहीं है।
- कुछ क्षेत्रों में पारंपरिक जनजातीय नेता (जैसे कि मेघालय में नोकमा) समुदाय के चुनावी निर्णयों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

4.3 राजनीतिक और प्रशासनिक कारक

- जनजातीय समुदायों में राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने और उन्हें चुनावी प्रक्रिया में शामिल करने के अभियान चलाए जाते हैं, जो मतदान प्रतिशत में वृद्धि कर सकते हैं।
- दल-बदल और राजनीतिक निष्ठा: हालाँकि पार्टी के प्रति निष्ठा एक महत्वपूर्ण कारक है, कुछ जनजातीय वोटर उन उम्मीदवारों या पार्टियों का समर्थन कर सकते हैं, जो उनकी नीतियों और मुद्दों का बेहतर प्रतिनिधित्व करते हैं।
- सुदूर और दुर्गम क्षेत्रों में रहने वाले जनजातीय समुदायों के लिए मतदान केंद्रों तक पहुँचना एक चुनौती हो सकती है, जिससे उनका मतदान प्रतिशत प्रभावित हो सकता है।

4.4 हाल के रुझान

- महिलाओं का बढ़ता प्रभाव: झारखंड जैसे राज्यों में हुए हाल के चुनावों से पता चला है कि ग्रामीण और आदिवासी महिलाएँ एक महत्वपूर्ण वोट बैंक के रूप में उभर रही हैं। महिला-केंद्रित कल्याणकारी योजनाओं ने उनके वोटिंग पैटर्न को प्रभावित किया है।

- स्थानीय दलों का उदय: हाल ही में कुछ क्षेत्रों में ऐसे जनजातीय-नेतृत्व वाले दलों का उदय हुआ है, जो स्थानीय जनजातीय मुद्दों को प्राथमिकता देते हैं।
- जनजातियों के मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों के बारे में अधिक जानने के लिए, मुझे बताएँ कि आप किस विशिष्ट क्षेत्र या समुदाय पर ध्यान केंद्रित करना चाहेंगे।

5 जनजाति क्षेत्र में मतदान प्रतिशत

1991 से 2025 तक के जनजातीय क्षेत्रों में मतदान प्रतिशत का सटीक डेटा उपलब्ध नहीं है, क्योंकि भारतीय निर्वाचन आयोग राज्य-वार और समग्र डेटा जारी करता है, न कि विशेष रूप से जनजातीय क्षेत्रों के लिए।

5.1 मतदान प्रतिशत से जुड़े प्रमुख रुझान

- पिछले कुछ दशकों में, विशेष रूप से 2014 और 2019 के चुनावों में, जनजातीय क्षेत्रों में मतदान का प्रतिशत बढ़ा है।
- निर्वाचन आयोग ने जनजातीय और वंचित समुदायों तक पहुँचने और उन्हें चुनावी प्रक्रिया में शामिल करने के लिए कई प्रयास किए हैं, जिससे मतदान में बढ़ोतरी हुई है।
- मतदान प्रतिशत में राज्य-वार काफी भिन्नता रही है। उदाहरण के लिए, 2014 के चुनावों में नागालैंड और लक्षद्वीप जैसे जनजातीय-बहुल राज्यों में उच्च मतदान देखा गया था, जबकि अन्य राज्यों में यह कम रहा था।

5.2 चुनावों के अनुसार मतदान प्रतिशत

हालाँकि जनजातीय क्षेत्रों का अलग से डेटा नहीं है, लेकिन लोकसभा चुनावों के लिए कुल मतदान प्रतिशत का डेटा उपलब्ध है :-

| क्रमांक | निर्वाचन वर्ष | जनजाति क्षेत्र में प्रतिशत |
|---------|---------------|----------------------------|
| 1. | 1991 | 55.9% |
| 2. | 2004 | 58.0% |
| 3. | 2014 | 66.4% |
| 4. | 2019 | 67.4% |
| 5. | 2024 | 66.1% |

6 जनजाति आधारित मतदान का विश्लेषण

एक जटिल विषय है, क्योंकि जनजातीय समुदायों के मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कई कारक होते हैं। हाल के चुनावों के रुझान बताते हैं कि जनजातीय वोट किसी एक पार्टी का नहीं होता, बल्कि यह क्षेत्रीय और स्थानीय मुद्दों के आधार पर बदलता रहता है। 2024 के लोकसभा चुनावों के रुझान 2024 के लोकसभा चुनावों में, भाजपा ने जनजातियों के लिए आरक्षित 47 सीटों में से 25 सीटें जीतीं, जो 2019 के मुकाबले छह सीटें कम थीं।

इसी दौरान कांग्रेस ने अनुसूचित जनजाति (एसटी) के लिए आरक्षित सीटों में 12 सीटें जीतकर बड़ी बढ़त हासिल की, जो 2019 में जीती गई 4 सीटों से काफी अधिक है। 2024 में कांग्रेस का वोट शेयर भी 1.5% बढ़ा।

2024 के चुनावों में, कांग्रेस को जम्मू-कश्मीर, गोवा, महाराष्ट्र और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में जनजातीय वोटों का बड़ा समर्थन मिला, जबकि अन्य राज्यों में यह उतना लोकप्रिय नहीं था।

7 जनजाति क्षेत्र के मुद्दे

- भूमि और वन अधिकार:** वन अधिकार अधिनियम (एफआरए) को लागू करना एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। कई राज्यों में, जनजातीय समुदायों के भूमि पर दावों को लगातार खारिज किया गया है, जिससे उनके बीच असंतोष बढ़ा है।
- सरकार की नीतियां:** सरकार द्वारा चलाई गई कल्याणकारी योजनाएं और नीतियां, जैसे पीएम-जनमन, जनजातीय आबादी को प्रभावित करती हैं। हालांकि, यूनिफॉर्म सिविल कोड (यूसीसी) जैसे मुद्दे कुछ जनजातियों को अपनी सांस्कृतिक पहचान और रीति-रिवाजों के लिए खतरा लगते हैं।
- क्षेत्रीय पार्टियाँ और नेता:** झारखण्ड में, जहां बड़ी जनजातीय आबादी है, वहां हाल ही में हुए चुनावों में झारखण्ड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) जैसे क्षेत्रीय दलों ने जनजातीय वोटों को आकर्षित किया है। जमीन के अधिकार से संबंधित चिंताओं के कारण भाजपा ने वहां जनजातीय वोट खो दिए।
- नई क्षेत्रीय पार्टियों का उदय:** कुछ राज्यों में, नई जनजातीय आधारित पार्टियों का उदय हो रहा है, जैसे राजस्थान में भारत आदिवासी पार्टी। यह राजनीतिक प्रतिनिधित्व की कमी के कारण हुआ है और यह दिखाता है कि राष्ट्रीय पार्टियाँ इन समुदायों का विश्वास पूरी तरह नहीं जीत पा रही हैं।

- **जागरूकता और पहुंच:** निर्वाचन आयोग के प्रयासों से दूरदराज के क्षेत्रों में मतदान केंद्रों की स्थापना की गई है, जिससे विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) जैसे समुदायों की भागीदारी बढ़ी है। 2024 के चुनावों में, अंडमान के शोम्पेन जनजाति ने पहली बार मतदान किया।

8 निष्कर्ष

कुल मिलाकर, जनजातीय मतदान का विश्लेषण बताता है कि यह किसी एक पार्टी या विचारधारा पर आधारित नहीं है। यह भूमि अधिकारों, सरकारी नीतियों और क्षेत्रीय राजनीतिक समीकरणों जैसे विभिन्न मुद्दों पर निर्भर करता है। 2024 के लोकसभा निर्वाचन परिणाम दिखाते हैं कि भाजपा ने जनजातीय सीटों में कुछ नुकसान सहा है, जबकि कांग्रेस और कुछ क्षेत्रीय दलों ने लाभ उठाया है।

➤ संदर्भ सूची

1. वैश्य, कल्पना, "भारतीय लोकतंत्र में मतदान व्यवहार", नवभारत प्रकाशन
2. फाड़िया, बी. एल. और जैन. पुखराज, "भारतीय शासन एवं राजनीति", साहित्य भवन पब्लिकेशन, पेज - 55
3. रावलोत, प्रेमसिंह और पुरोहित, कुसुम लता "राजनीति में मतदान व्यवहार का स्वरूप", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिंदी रिसर्च, वैल्यू -7, इश्यू 4, 2021 पेज-35-37
4. कुमार, संजय "भारत में मतदान व्यवहार: अध्ययन का इतिहास और उभरती चुनौतियां, प्रतिमान, 2013 पेज - 321-345
5. कोठारी, रजनी "भारत में राजनीति कल और आज", वाणी प्रकाशन, पेज – 13
6. कोठारी, रजनी "कास्ट पॉलिटिक्स इन इंडिया", ओरियंट लोंगमैन, दिल्ली, 1970, पृष्ठ-70
7. चंद्र, बिपिन "आजादी के बाद का भारत", हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, 2011, पृष्ठ-65
8. गोस्वामी, भालचंद्र, "भारत में निर्वाचन सुधार: दशा और दिशा", प्वाइंटर पब्लिशर्स हाउस, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ- 8
9. मिथलेश कुमारी, "भारत में निर्वाचन और मतदान व्यवहार", श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, वैल्यू-5, इश्यू -4, दिसम्बर-2017,
10. <https://egyankosh.ac.in>
11. NIVERS | IVE. न्यू दिल्ली, ओरियंट
12. महाजन, गुरप्रीत री, डिंग इंडिया सैलेक्सस फ्रोम ई.पी.डब्ल्यू ब्लैक स्वन, 2019 |
13. रॉय, प्रणय, बटलर, डेविड एण्ड लाहिरी, अशोक (1984), ए कंपेडियम ऑफ इंडियन इलैक्सांस, अरनोल्ड, हीनेमन।
14. देसाई, पी. (1967), "कास्ट एण्ड पॉलिटिक्स, ई.पी. डब्ल्यू. वोल्यूम 2 (17): 797-7991
15. सेठी, रेणु (1988), "डिटर्मिनेंट्स ऑफ वूमन्स एटिव पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन, ई.पी. डब्ल्यू. वोल्यूम 49 (4): 565-579 |